

CSIR in Media



News Bulletin
11th to 19th June 2018



CSIR-IMTECH

19th June, 2018

एंटीबायोटिक्स का ज्यादा इस्तेमाल कई बार खतरनाक होता है : वीपी बदनोर



सिटी रिपोर्टर | चंडीगढ़

एंटीबायोटिक्स के ज्यादा इस्तेमाल से बॉडी की रजिस्टेंस पावर घटती जा रही है। एंटीबायोटिक्स के ज्यादा इस्तेमाल से भविष्य में सबसे बड़ी चुनौती यह सामने आ रही है कि धीरे-धीरे डोज बढ़ती जा रही है। ऐसे में इसका नुकसान बॉडी ऑर्गेन को हो रहा है। लोग बिना किसी डॉक्टरी सलाह के एंटीबायोटिक्स ले रहे हैं। जो उनके लिए घातक सिद्ध हो सकते हैं। हॉस्पिटल्स में दवा प्रतिरोधी बैक्टीरिया को सुपरबग या एंटीमाइक्रोबियल कहा जा रहा है। हमें जल्द इसका विकल्प ढूंढना होगा। यह बात सोमवार को इंस्टीट्यूट ऑफ माइक्रो बेल टेक्नालॉजी 'इमटेक' में एंटीमाइक्रोबियल रजिस्टेंस- नीड फॉर युनाइटेड फोर पर आयोजित एक कॉन्फ्रेंस में साइंटिस्ट्स ने रखी। इस आयोजन में पंजाब के गवर्नर

इम्यून सिस्टम तेजी से कमजोर हो रहा

इमटेक के डायरेक्टर अश्विनी कौल ने कहा कि अस्पताल और आम जनता में एंटीबायोटिक दवाओं के दुरुपयोग के चलते मानव शरीर के घट रहे इम्यून सिस्टम तेजी से कमजोर हो रहा है। अगर ऐसा ही रहा एक दिन ऐसा होगा जब ज्यादा पावरफुल एंटीबायोटिक भी मानव शरीर पर बेअसर हो जाएंगे। जल्द नए सॉल्यूट और आईटीएमआर के पूर्व डीजी डॉ. एन के गंधुली, एंटी माइक्रोबियल रजिस्टेंस 'एएमआर' से विद्युत के लिए भारत को कदम उठाने की सलाह दी।

और चंडीगढ़ के प्रशासक वीपी सिंह बदनोर बतौर चीफ गेस्ट मौजूद थे। प्रशासक वीपी सिंह बदनोर ने कहा कि हेल्थ क्षेत्र में साइंटिस्ट्स का योगदान अहम होता है। एंटीबायोटिक्स का ज्यादा इस्तेमाल मानव जीवन के लिए कई बार खतरनाक सिद्ध हो जाता है।

Published in:
Dainik Bhaskar

CSIR-IMTECH

18th June, 2018

Symposium on rise in drug resistant bacteria held at IMTECH

Press Trust of India | Chandigarh June 18, 2018 Last Updated at 22:50 IST

The CSIR-Institute of Microbial Technology, a microbial institute under the Ministry of Science and Technology, organised a one-day symposium here today on the issue of the rise in drug resistant bacteria or super-bugs.

The symposium, titled 'Antimicrobial Resistance (AMR): Need for a United Front' aims to develop new collaborative research networks for building multi-institutional projects with specific focus on the discovery of novel anti-bacterials, exploring policy measures and developing tools to tackle issues of AMR in India.

The conference was presided over by Punjab Governor and Chandigarh Administrator V P Singh Badnore.

The governor suggested that it was crucial that the scientific community, along with other public health stakeholders, work towards delivery of new solutions for bacterial drug resistance.

The governor appreciated IMTECH's role in developing new drugs that can counter drug resistance bacteria.

He also stressed on the urgent need of Indian research and development institutions to deliver new solutions on the issues of AMR.

Eminent scientist N K Ganguly, former DG, ICMR, Delhi, advised steps India must take to tackle the vital issue of AMR.

Speaking on the occasion IMTECH Director Anil Koul said, "We are witnessing an alarming rise in the levels of antibiotic-resistant bacteria linked to misuse of antibiotics in hospitals and general population. The rise of drug-resistant pathogens is a global challenge. The IMTECH is a key stakeholder in developing new drugs to tackle AMR."

He stressed that the IMTECH also has a national centre for Microbial Type Culture Collection and Gene Bank which has more than 30,000 unexplored microbial strains, that can serve as goldmine for discovery of new antibiotics, the way penicillin, streptomycin and other antibiotics were discovered in early 19th century.

The institute is also part of the Union Government's National Action Plan for antimicrobial resistance containment and aims to tackle issue of antimicrobial resistance via new research in drugs, vaccine and diagnostics.

The IMTECH is entering into new collaborations for tackling drug resistant bacteria with international and national companies like Johnson & Johnson & Cadila Healthcare Ltd respectively, Koul informed.

Published in:
Business Standard

CSIR-IITR

17th June, 2018

BHARAT JYOTI AWARDS

‘People who dedicatedly work for society are an inspiration’

LUCKNOW: Governor Ram Naik on Friday said that people who worked for the society with dedication were an inspiration for everyone. He was addressing an event organised by Bharat Jyoti at IITR campus to honour various people for their work in holistic human welfare.

Among the recipients of Bharat Jyoti award were Prof KM Singh, former vice-chancellor, KGMU who got the lifetime award for medico-legal, Abha Singh for women's empowerment, Kanak Rekha for literature, Prof Alok Dhawan for science and research, Prof Kavita Rastogi for education and Prof MLB Bhat.

NAIK SAID HE HAD ESTABLISHED A GRAHAK PANCHAYAT IN 1960 UNDER WHICH ITEMS OF MONTHLY USE WERE PURCHASED FOR 100 PEOPLE COLLECTIVELY

The governor said he was associated with a consumer organisation of Mumbai. He said he had established grahak panchayat in 1960 under which items of monthly use were purchased for 100 people collectively that earned certain profit percentage for the society.

Vijay Acharya, founder president of Bharat Jyoti gave a detailed presentation on the objectives of the award ceremony and also shared the work being done by the organisation.

Dr RM Mathur, senior vice-president of the organisation, conducted the event. "We are already working in the area of consumer protection. Our aim is to further motivate people to work in areas such as education for underprivileged children," said Acharya. "Such events and recognitions motivate individuals to do more for the society, especially young individuals who can also motivate others to do so," said Prof KM Singh.

Published in:
Hindustan Times

CSIR-CEERI

17th June, 2018

स्वबरो में शहर

स्मार्ट इंडिया हैकाथन का हार्डवेयर संस्करण आज से

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 17 जून।

एचआरडी मंत्रालय की ओर से स्मार्ट इंडिया हैकाथन के मार्च में आयोजित सॉफ्टवेयर संस्करण के बाद सोमवार से इसके हार्डवेयर संस्करण के अंतिम चरण शुरू होगा। पांच दिनों तक आयोजित होने वाले हैकाथन में दस समस्याओं के हार्डवेयर समाधान के लिए 106 टीमों के 636 विद्यार्थी भाग लेंगे जो दस समस्याओं पर काम करेंगे। स्मार्ट इंडिया हैकाथन का आयोजन 10 केंद्रों पर होगा, जिसमें सीरी-पिलानी, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलुरु, तीन आइआइटी और एक एनआइटी भी शामिल हैं। सीरी-पिलानी के निदेशक प्रोफेसर शांतनु चौधुरी ने बताया कि विद्यार्थी पांच दिन लगातार इन केंद्रों पर रहकर समस्या के समाधान हार्डवेयर प्रोटोटाइप (प्रारूप) तैयार करेंगे।

Published in:

Jansatta

Plastic to fuel

CSIR-IIP

17th June, 2018

In 2017, then Union Minister Y.S. Chowdary, in a written reply in the Lok Sabha, said that plastic can be converted into petrol, diesel and other hydrocarbons. He elaborated on how CSIR-Indian Institute of Chemical Technology, Hyderabad has developed a catalyst that can be used for conversion of waste plastics to fuel oils. He added that CSIR-Indian Institute of Petroleum, Dehradun in collaboration with GAIL (India) Ltd. has developed a process by which waste polyethylene and polypropylene type plastics can be converted into petrol and diesel. The estimate was that 1 kg of waste polyethylene and polypropylene can be converted to either about 600-650 ml of petrol or 700-750 ml of diesel along with LPG, with the process developed at the bench scale. Why does it not translate into action on the ground (Editorial page, “A plastic charter”, June 13)?

Published in:
[The Hindu](#)

CSIR-IITR

16th June, 2018

राज्यपाल ने कई हस्तियों को 'उपभोक्ता श्री सम्मान' से नवाजा

डा. केएम सिंह को 'भारत ज्योति एवं लक्ष्मी रमण आचार्य लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड'

लखनऊ (एसएनबी)। राज्यपाल श्री राम नाईक ने शुक्रवार को भारत ज्योति संस्था द्वारा भारतीय विषविज्ञान अनुसंधान संस्थान के प्रेक्षागृह में आयोजित एक समारोह में किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. केएम सिंह को 'भारत ज्योति एवं लक्ष्मी रमण आचार्य लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' से तथा भारतीय विषविज्ञान अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के निदेशक प्रोफेसर अलोक धवन, किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एमएलवी भट्ट, लखनऊ विश्वविद्यालय की प्रोफेसर कविता रस्तोगी, महिला एवं समाज कल्याण के क्षेत्र में कार्य करने वाली वरिष्ठ अधिवक्ता डा. आभा सिंह एवं समाज सेवी श्रीमती कनक रेखा चौहान को वर्ष 2018 के 'उपभोक्ता श्री' सम्मान से सम्मानित किया।

श्री नाईक ने बताया कि वे भी मुंबई में उपभोक्ता संस्था से जुड़े रहे हैं। 1960 में उन्होंने ग्राहक पंचायत की स्थापना की गई थी



जिसमें सौ लोगों की मासिक जरूरतों को सामूहिक रूप से क्रय किया जाता था, जिससे सोसाइटी को कुछ प्रतिशत का आर्थिक लाभ भी होता था। उन्होंने यह भी बताया कि

पेट्रोलियम मंत्री रहते हुए उनके प्रयास से गैस कनेक्शन की प्रतिक्षा सूची तो समाप्त हुई उसके साथ-साथ बड़ी संख्या में नये कनेक्शन भी आवंटित किये गये। उन्होंने कहा

कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अपील पर करोड़ों उपभोक्ताओं ने गैस सिलेंडर पर मिलने वाली सविस्ती को स्वतः जरूरतमंदों के लिये छोड़ दिया।

राज्यपाल ने कहा कि जो लोग समर्पित होकर समाज के लिये कार्य करते हैं तो उनके व्यक्तित्व से समाज को प्रेरणा मिलती है। ऐसे आयोजन के माध्यम से समाज के सामने एक उदाहरण जाता है। समाज को कुछ देने का संकल्प करें। राज्यपाल ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि सम्मान प्राप्त करने वालों को महिलाओं का वरावर का प्रतिनिधित्व है। उन्होंने कहा कि दीक्षान्त समारोह के माध्यम से महिला सशक्तीकरण का नया चित्र देखने को मिल रहा है। समाज में छात्राओं का बदलता चित्र 1998 में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेई द्वारा आरम्भ की गई 'सर्व शिक्षा योजना' तथा वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' का परिणाम है। उन्होंने कहा कि बेटियों को आगे बढ़ाने में समाज समर्थन करें। कार्यक्रम में भारत ज्योति संस्था के संस्थापक विजय आचार्य, कार्यकारी अध्यक्ष फादर पौल रोडरिक्स सहित अन्य विशिष्ट जन उपस्थित रहे।

Published in:
Rastriya Sahara

Assam: Breather for farmers, Jorhat based NEIST comes up with healing ointment

CSIR-NEIST

16th June, 2018



Think water borne diseases and what usually comes to mind is diarrhoea and other gastro enteric diseases. Seldom do we relate the gouged out flesh between toes and fungal infections which follow to the ravages of a water borne affection which infects lakhs of our farmers and others, who spend days working in watery conditions. To provide relief to the intolerable itching and pain, the North East Institute of Science and Technology here has come up with an ointment which not only effectively treats the infection but heals the broken skin. If required the ointment will be supplied in large quantities free of cost by

CSIR-NEIST to those who are affected especially during the annual floods in the State. Mantu Bhuyan, senior scientist, Aromatic and medicinal division of CSIR-NEIST said that the ointment named Kisan Guard, which was totally herbal was launched in Majuli last year on a trial basis. “During the sowing of Sali paddy, our farmers spend more than a month working in knee deep water in the fields. Majuli is also flooded during the rainy season and people have to make their way through puddles and watery patches. They are often affected by fungal infections which may result in Athletes foot,” Bhuyan said. In fact in Assam during the rainy season there is large scale incidence of such infections apart from the occupational exposure hazards of farmers and people retrieving wet sand from the banks of the Brahmaputra and other rivers. Bhuyan said that the feedback received was very good. Pradeep Das, a physician based in Majuli who also runs an NGO, Majuli Seva

Samiti said that he had distributed several tubes of the ointment to people who had been suffering from fungal infections and had found that they got cured. “I had several people asking me for more. They told me that this was better than a similar ointment supplied by the government from time to time especially during the annual floods,” he said over phone from Majuli. The cream had to be applied prior to going into the waters and once again during the night before going to bed. NEIST director D Ramaiah said that the Institute was in position to supply in large scale, free of cost, if the need arose as part of its societal obligation. “This cream and another one for protection of domestic animals from fungal infections work wonders and we are ready to market them as well,” he said.

Jatin Kalita, head of Research Training and Business development, NEIST said that the technology for preparing Kisan Guard was in readiness for the past eight months or so but was yet to be transferred for commercial production. He further said that about 1000 tubes of the anti fungal ointment for cows and buffaloes had also been sought by the Veterinary department at Kakajan in Jorhat district. The letter seeking the same had reached them yesterday.

The team of scientists who had produced the ointment included Bhuyan, Sanjay Chanda, PR Bhattacharyya (retired) and resident doctor PK Baruah.

Published in:

[Nenow](#)

Novel gold nanocomplex for cancer drug delivery

CSIR-IICB



Anti-tumour drugs could target the diseased cell

Using gold nanoparticles coated with a simple organic molecule (porphyrin), researchers from CSIR-Indian Institute of Chemical Biology, Kolkata, have designed an efficient drug nanocarrier. The nanocarrier was found to effectively deliver doxorubicin (anti-tumour drug) to the nucleus of the diseased cell and bring about programmed cell death. Porphyrin was armoured on the gold nanosurface via continuous stirring method. “Porphyrin is a simple organic compound and it gives the necessary protection and stability to the nanosurface. Porphyrins are essential co-factors in many

16th June, 2018

human proteins such as hemoglobin and so it can escape from the macrophages in our body,” explains Dr. Nakul C. Maiti, Senior Scientist at the Structural Biology and Bioinformatics Division of CSIR-IICB and one of the corresponding authors of the paper published in *ACS Omega*. The porphyrin molecule was found to be uniformly distributed on gold nanoparticles and the porphyrin–gold complex was stable. The anti-tumour drug doxorubicin was then successfully loaded on the porphyrin–gold nanosurface. “Doxorubicin is selectively released when it reaches the low-pH environment seen in cancerous cells,” explains Kaushik Bera, research scholar at the institute and one of the first authors of the paper.

Activity of the complex

Its activity was then tested on brain and lung cancer cells and normal healthy cells. The porphyrin–gold complex without the drug showed no toxicity to healthy and cancerous cells.

The nanoparticles coated with the drug showed very low toxicity to normal cells and caused programmed cell death both in brain and lung cancer cells. Multidrug resistance is one of the major barriers in cancer cells, where the drug is quickly ejected out, reducing the effective drug concentrations within the cells and thus decreases its sensitivity.

“We found that the drug-coated nanoparticles were retained well inside the cells thus showing higher activity,” says Samarpan Maiti, another research scholar at the institute and one of the first authors of this paper in an email to *The Hindu*.

“There are several pathways by which the drug can damage the DNA. Currently we are studying the pathways, and trying to design a system that can release the drug more efficiently. We are also studying how the system works in real scenario of tumour model,” says Prof. Chitra Mandal from the Cancer Biology & Inflammatory Disorder division of this institute and one of the corresponding authors of the paper.

Published in:
[The Hindu](#)

For two PMC school students, a chance to work with scientists, chase their dreams

CSIR-NCL



Suraj Thorat was ecstatic when he got the opportunity to use a computer for the first time in his life, while he was pursuing a summer internship under a team of scientists at the CSIR-National Chemical Laboratory (NCL). Suraj, who has just started Class IX, hails from a small village called Tondpur in Hingoli district. He has been studying at a Pune Municipal Corporation (PMC) school, Vidya Niketan: Hutatma Balveer Shirishkumar, for about a year. But his dreams are about a galaxy, or galaxies, far, far away. “I want to study galaxies and now I know how to use computers,” said Suraj, who, along with Muskan Singh, another student of the same

16th June, 2018

school, has completed a two-month-long internship under the mentorship of scientist Chetan Gadgil. The internship was organised by the Exciting Science group, operating under the aegis of CSIR-NCL and the Indian Institute of Science, Education and Research (IISER), Pune. This is the fourth year the team has been offering summer internships to students studying at corporation schools, but they have been actively organising science talks and competitions for over a decade. “I was assigned to collect data on the length of rivers, and trace the paths of all rivers across continents like Asia, North America and Africa, using histograms plotted by computers. I have learned so much about the thousands of rivers in these continents,” said Suraj. He added, “I was so excited to get a chance to work on a computer... in my school, students are introduced to computers only in class IX.... I am lucky that I know the various parts, their uses and how to operate one before my classmates”. For him, learning how to use computers was

the highlight of the internship. “He is so happy... Suraj doesn’t want to return to our village,” said Suraj’s father, Bhaskar Thorat. Muskan, a Class X student who was also part of the internship, was assigned the task of studying mountains in various continents. “Though I had worked on computers and was comfortable with Windows 7, the systems at the labs were far advanced. The atmosphere was friendly and our guides addressed even the smallest of our queries,” she said.

Muskan said she considers herself lucky to get such a hands-on opportunity to learn science. “Since Class VI, my summer vacations have been spent in some science-related activity or the other..,” she said, adding that she also loves Maths.

Published in:
[The Indian Express](#)

CSIR invention BGR-34 enlisted as major achievement in Delhi

CSIR-NBRI, CIMAP

14th June, 2018

The Union Science and Technology Ministry enlisted the cost-effective, herbal drug for diabetes - BGR 34, as one of their major achievements of the last four years under the Modi government at a conference in Delhi. Created by the Council for Scientific and Industrial Research (CSIR), the drug has already acquired number one slot in an anti-diabetic ayurvedic product category in the IMS Health ranking. "Derived from Ayurvedic plant extracts, the BGR-34 anti-diabetic herbal drug is matching the efficacy level of any branded modern medicine in controlling the sugar level," said Dr Girish Sahni, Director General, Council for Scientific and Industrial Research (CSIR). Dr Harsh Vardhan, Union Minister of Science and Technology pointed out that the Ayush ministry too has approved it after it was tested on patients over a period of 18 months in Delhi, Himachal Pradesh, Haryana, Punjab, and Karnataka.

The drug has been developed jointly by scientists of National Botanical Research Institute (NBRI) and Central Institute for Medicinal & Aromatic Plants (CIMAP), the Lucknow, based research units of the CSIR. The drug is taken as an add-on or adjuvant to existing diabetes treatment. It helps in maintaining normal blood glucose level, releasing anti-oxidants and checking free radicals. About 67 per cent of the patients showed normal blood sugar levels within three to four days of drug usage. A study published in the Journal of Traditional and Complementary Medicine, an international journal too has found that BGR-34, is effective in cutting down heart attacks by 50 per cent in diabetic patients. According to the experts, in 2015, there were 415 million adults living with diabetes and this number is expected to increase to around 642 million by 2040.

Published in:

[DNA](#)

NEERI launches eco-friendly sanitary napkin incinerator

CSIR-NEERI

13th June, 2018



NAGPUR: In a laudable effort to contribute to the cleanliness drive in India, the National Environmental Engineering Research Institute (NEERI) launched 'Green Dispo', an eco friendly incinerator for disposal of sanitary napkins on Monday. The product will be available in the markets by next month. This model has been made in collaboration with the International Advanced Research Centre for Powder Metallurgy and New Materials (ARCI) and Sowbal Aerothermics (SA). Scientist and head of energy and resource management division, Nitin Labhsetwar said, "With increasing awareness about hygiene, use of

sanitary napkins has risen. Nearly 432 million pads are disposed every month in India. However, the traditional system of disposal of these napkins poses a major threat to the environment because of their toxic emissions. Not only this, the process of disposal is very time consuming." The scientist later spoke about the uses of Green Dispo. He elucidated that Green Dispo is not only a model of an eco-friendly incinerator for sanitary napkins, it is model of improvements. As compared to the other products in the market, it has an improved combustion chamber, has less energy consumption and most importantly keeps in mind the safety concerns." According to reports, a small scale incinerator can dispose 5-10 pads. However, NEERI's model can incinerate around 60 pads in an hour. About maintenance issues, Labhsetwar said, "We have made sure that our contract mentions that the maintenance of such a sensitive device is a must and the same must be done every six months."

Director of CSIR-NEERI Ramesh Kumar addressed the gathering and spoke about the institute's efforts to tackle environmental issues. Director of ARCI Padmanabham was the guest of honour. Representative of Girl Child Industries N Sushma gave a live demonstration of the model. Roy Johnson from ARCI and VVS Rao from SA gave a presentation about the contribution of their institutions in this model. The vote of thanks was proposed by Labhsetwar. Madhubala Sabu from We Dare social organization and Anusuya Kale Chhabrani from Swachh organization were also present at the event.

Published in:
[Times of India](#)

CSIR-CDRI

12th June, 2018

GBP team interacts with CDRI scientists

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

A four-member delegation from Guwahati Biotech Park (GBP), Assam, led by Bula Choudhury and MG Barthakur, visited Central Drug Research Institute (CDRI) on Monday. The objective of the visit and interaction with the scientists was to seek collaboration for the betterment of science and technology entrepreneurship related with healthcare and pharmaceuticals in north-eastern India.

Introducing GBP, Choudhury said it was a visionary project launched by an autonomous society under the Assam government. "The



founders of GBP hope to change the economic condition of the region and the state, thereby increasing the opportunities for the citizens of north-eastern and eastern India. GBP aims to be a place where educators, researchers

and business class come together as collaborative partners for the betterment of science and technology entrepreneurship in northeastern India," she said.

Barthakur explained the role of GBP to the CDRI scien-

tists stating that it with its facilities would like to promote the healthcare and pharmaceutical sector of northeastern India with emphasis on the exploration of its natural resources for providing maximum benefits to the people residing there. "The focus on GBP is to boost the state's renowned healthcare practices of Ayurveda by synergising traditional knowledge with scientific validation and technical product profiling and clinical database. Besides this, we are also aiming at promoting discovery of new chemical entities (NCE) from natural products of various targets and development in vitro testing as well as

semisynthesis and synthesis of biologically-active compounds along with generation of pseudonatural products," he said. Srikanth Kumar Rath (CDRI) gave a detailed presentation of the achievements and facilities of the institute in the pharmaceutical sector and for the 'Affordable Healthcare for All'. He also discussed skill development and other training programmes and biological screening facilities by which bilateral collaboration could be established.

Wahajul Haq discussed the opportunities at CDRI and how both GBP and CDRI could work in close coordination for the betterment of science and technology entrepreneurship related with the healthcare and pharmaceutical industry in northeastern India.

Published in:

The Pioneer

CSIR-CDRI

12th June, 2018

गुवाहाटी बायोटेक
पार्क के प्रतिनिधिमंडल
ने सीडीआरआई का
किया दौरा, कहा-

'विज्ञान और प्रौद्योगिकी से स्वास्थ्य क्षेत्र का होगा उत्थान'



जानकीपुरम विस्तार स्थित सीडीआरआई में पहुंची चार सदस्यीय टीम।

■ **एनबीटी, लखनऊ :** पूर्वोत्तर भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी उद्यमिता के उत्थान के लिए एक ऐसा मंच तैयार करना है जो स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार ला सके। यह बात गुवाहाटी बायोटेक पार्क (जीबीपी) के एक प्रतिनिधिमंडल ने सेंट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीडीआरआई) का दौरा करने के दौरान कही। जानकीपुरम विस्तार स्थित सीडीआरआई में सोमवार को जीबीपी से डॉ. बुला चौधरी और डॉ. एमजी बारठाकुर के नेतृत्व में चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने दौरा किया। इसका मकसद सीडीआरआई के वैज्ञानिकों से चर्चा कर पूर्वोत्तर राज्यों में स्वास्थ्य और दवा से संबंधित सहयोग की तलाश करना है।

डॉ. एमजी बारठाकुर ने बताया कि बायोटेक पार्क अपनी सुविधाओं के माध्यम से पूर्वोत्तर में स्वास्थ्य देखभाल और फार्मास्यूटिकल्स सेक्टर को बढ़ावा देना चाहता है। इसका मुख्य फोकस प्राकृतिक संसाधनों की खोज पर जोर देना है, जिससे लोगों को अधिकतम लाभ मिल सके। वहीं, डॉ. बुला चौधरी ने बताया कि असम सरकार ने एक स्वायत्त सोसायटी की मदद से एक परियोजना तैयार की है। इसके माध्यम से राज्य की आर्थिक स्थिति को बदलने का प्रयास किया जाएगा। सीडीआरआई की ओर से डॉ. श्रीकांत कुमार रथ ने फार्मा सेक्टर से संबंधित उपलब्धियों और सुविधाओं के बारे में प्रतिनिधिमंडल को जानकारी दी।

विज्ञान महोत्सव की तैयारियों का लिया जायजा

■ **एनबीटी संवाददाता, लखनऊ**

: भारतीय अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव की तैयारियों को लेकर मंडलायुक्त अनिल गर्ग ने सोमवार को एक बैठक की। मंडलायुक्त कार्यालय में हुई बैठक में कई विभाग के अधिकारी मौजूद रहे। यहां मंडलायुक्त ने सभी विभागों की जिम्मेदारियां तय कर दी। गर्ग ने बताया कि महोत्सव 5 से 8 अक्टूबर के बीच होना है। इसमें देश-विदेश से कई वैज्ञानिक सहित अन्य अतिथि भाग लेंगे। साथ ही सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम करने के निर्देश दिए। इसके अलावा पर्यटन विभाग को अतिथियों के रुकने और अन्य सुविधाओं का पूरा ध्यान रखने को कहा। नगर निगम सहित स्वास्थ्य, लोक निर्माण विभाग, लेसा, परिवहन, सूचना और एलडीए को उनकी जिम्मेदारियों से अवगत करवाया।

Published in:

Navbharat Times

Green concrete set to flood the market soon

CSIR-SERC

11th June, 2018

The cement industry is one of the primary producers of carbon dioxide, a highly polluting greenhouse gas. To combat this, the city-based CSIR-Structural Engineering Research Centre (CSIR-SERC) has created a technology to enable the commercialisation of geopolymer concrete, which eliminates the carbon dioxide emission and is produced with industrial waste, creating a sustainable model.

Chennai: Senior scientist PS Ambily and her team have created a geopolymer concrete technology, built using industrial waste such as fly ash from thermal plants, rice husk from paddy and ground-granulated blast-furnace slag (GGBS). “There are different methods used for creating polymerisation – most of which involve either an energy treatment or high alkaline reaction generation technology. But the one we have invented has polymerisation taking place at room-temperature and doesn’t require water during the curing process, as in conventional methods,” explained the scientist. The technology requires less energy for production, has a low carbon footprint and high strength, and creates sustainability through the systematic use of industrial waste.

“The technology has been demonstrated during pilot studies and has been used in the building of an annex structure in CLRI Kendra Vidyalaya School. In fact, the cost-effective and eco-friendly material can be easily adapted to suit diverse needs by modifying design parameters. Geopolymer concrete can be used in construction, landscaping, container yards, footpath construction, for parking lots among others. This is a highly profitable business for Micro, Small & Medium Enterprises (MSMEs),” added Ambily. While research on geopolymer concrete has been ongoing, the first attempt towards commercial production has been made on Sunday, when the technology was transferred to Kiran

Global Geocements Limited, thanks to a tripartite agreement signed by CSIR-SERC, National Research Development Corporation (NRDC) and the private entity. Speaking to DT Next, S Singaravelu, Managing Director of the city-based manufacturing cement unit, said that this “green” concrete technology can be mass produced at a faster rate than conventional concrete.

Published in:

[DT Next](#)

Please Follow/Subscribe CSIR Social Media Handles



[CSIR INDIA](#)



[CSIR_IND](#)



[CSIR India](#)